Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278,
http://www.srjis.com/issues_data?issueId=211
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, APRIL-MAY 2023, VOL-11/57
https://doi.org/10.5281/zenodo.8076972

जनजातीय महिलाओं की समस्याएँ : उत्तर प्रदेश के संदर्भ में एक अध्ययन

डॉ. शोभनाथ पाठक
सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रस्तुत शोध–आलेख उत्तर प्रदेश की जनजातीय महिलाओं पर आधारित है जो जनजातीय महिलाओं की समस्याओं को उद्घाटित करता है। जनजातीय महिलाओं हेतु विविध कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। इसके बावजूद भी बराबरी के दर्जे के संदर्भ में अभी भी यह बहुत पीछे है। इतिहास के आईने में झांके तो स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि जनजातीय महिलायें शिक्षा, चिकित्सा, व्यवसाय, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक भागीदारी के संदर्भ में अभी भी हाशिये पर हैं तो वहीं शिक्षा, चिकित्सा के साथ परिवार में मुखिया की भूमिका एवं अन्य विविध स्तरों पर भी इनकी पूरी भागीदारी सुनिश्चित नहीं हो पायी है। अतएव इन सभी पक्षों का तथ्यगत विश्लेषण करने का प्रयास प्रस्तुत शोध–आलेख में किया गया है।

प्रमुख शब्द : *मुखिया, भागीदारी, आश्रित, अभिकरण, कुपोषण, परतंत्रता, प्रस्थिति, भूमिका।*

परिचय

मानव इतिहास की यात्रा अपनी आदिम अवस्था को पार करते हुए आज उत्तर आधुनिक समाज तक पहुँच चुकी है जहाँ मानव के जीवन जीने की पद्धति एवं उनकी संस्कृति भी काफी बदली है। आदिम कहा जाने वाला समाज का भी जीवन बड़े स्तर पर प्रभावित हुआ है। आदिम समाज के संदर्भ में गिलीन एवं गिलीन कहते हैं कि– ''स्थानीय जनजातीय समूहों का ऐसा समुदाय जनजाति कहा जाता है जो एक सामान्य क्षेत्र में निवास करता है, एक सामान्य भाषा का प्रयोग करता है तथा जिसकी सामान्य संस्कृति है।''[1] अर्थात इनका एक अलग ही जीवन था लेकिन आज इनके बीच पुरुष समाज के साथ–साथ महिलाओं का जीवन भी प्रभावित हुआ है। पिता, पति और पुत्र से जुड़ी उनकी प्रस्थिति एवं भूमिका में परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। महिलायें पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जीवन को गति दे रही हैं। वस्तुतः यह सिक्के का एक पक्ष है, सिक्के के दूसरे पक्ष को हम देखें तो कुछ ही महिलायें इस मुकाम तक पहुँच पायी हैं। महिलाओं का बहुतायत प्रतिशत आज भी स्वतंत्र जीवन की वैचारिकी से दूर है। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर आज भी उनकी पूरी भागीदारी सुनिश्चित नहीं हो पायी है। यदि हम जनजातीय महिलाओं की बात करें तो आज भी उनका एक बड़ा तबका रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा एवं चिकित्सा जैसी मौलिक आवश्यकताओं से बहुत दूर है। वैसे इस दिशा में भारत सरकार एवं राज्य सरकार के प्रयास बड़े स्तर पर जारी हैं। फिर भी जनजातीय महिलायें विविध समस्याओं के जकड़न से अपने को बाहर नहीं निकाल पा रही हैं। अभी भी समस्याओं को लेकर प्रश्न चिन्ह बना हुआ है। अस्तु इन्हीं पक्षों पर विश्लेषण के साथ–साथ उनसे जुड़े उत्तरों को भी खोजने का प्रयास इस शोध–आलेख के अन्तर्गत किया गया है।

उत्तर प्रदेश की जनजातियों का भौगोलिक परिदृश्य

उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर, सोनभद्र, महराजगंज, बहराइच, देवरिया, गोरखपुर जनपद जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र हैं। भारत की कुल अनुसूचित जनजातियों की संख्या का 1.09 प्रतिशत उत्तर प्रदेश में पायी

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

जाती हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश की जनसँख्या में अनुसूचित जनजातियों का प्रतिशत 0.6 है। उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक संख्या में गोंड जनजाति पायी जाती है। उत्तर प्रदेश में 1967 के अनुसार 5 जनजातियों; बुक्सा, जौनसारी, भोटिया, थारू एवं राजी को अनुसूचित जनजातियों का दर्जा दिया गया है। लेकिन 2003 में 10 और जनजातियों को इसमें शामिल किया गया है।[2]

उत्तर प्रदेश की जनजातियों का जिलावार विवरण[3]

क्रम संख्या	जनजाति का नाम	जिला
1.	गोंड, ओझा, धुरिया, नायक, पथारी और राजगोंड	महाराजगंज, सिद्धार्थ नगर, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया, मऊ, आजमगढ़ जौनपुर और सोनभद्र
2.	खरवार, राजगोंड	देवरिया, बलिया, गाजीपुर, वाराणसी और सोनभद्र
3.	सहरिया	ललितपुर
4.	परहिया, बैगा, अगारिया, पटारी, भुइयां	सोनभद्र
5.	पांखा, पानिका	सोनभद्र एवं मिर्जापुर
6.	चेरो	सोनभद्र और वाराणसी
7.	थारू	गोरखपुर
8.	बुक्सा या भोक्सा, महीगीर	बिजनौर

पुस्तक समीक्षा

1. योगेश अटल एवं यतीन्द्र सिंह सिसोदिया ने भारत की विविध जनजातियों का गंभीर एवं तथ्यपरक वर्णन प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक आदिवासी भारत के परिचयात्मक विश्लेषण के साथ–साथ आदिवासियों की बदलती जनसंख्यात्मक स्थिति का भी विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इसके साथ–साथ जनजातीय समुदाय के बीच अपनी परम्परागत जीवनशैली से इतर हिन्दुत्व के द्वार पर कदम रखने जैसी वैचारिकी का भी वर्णन किया है।

2. डॉ. हरिश्चन्द्र उप्रेती ने भारत की जनजातीय समुदाय की संरचना एवं उनकी विकासयात्रा का वर्णन किया है जिसके अन्तर्गत उनकी सामाजिक संरचना, विवाह प्रणाली, नातेदारी, गोत्र व्यवस्था, वंश परंपरा, वसीयत, उत्तराधिकार एवं आवास व्यवस्था के साथ–साथ उनके बीच राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था का यथार्थ एवं तथ्यपरक वर्णन किया है।

3. डॉ. मधुसूदन त्रिवेदी ने भारत की जनजातियों की गहन विवेचना अपनी पुस्तक 'सामाजिक नृ–विज्ञान' में की है जिसमें उन्होंने जनजातीय जीवन से जुड़े विविध पक्षों जैसे उनकी जनसंख्या, भाषायी संरचना, विवाह, परिवार, नातेदारी के साथ–साथ विविध सांस्कृतिक पक्षों का जीवन्त वर्णन किया है। इसके अलावा यह पुस्तक जनजातीय समाज के समस्याओं पर भी तथ्यपरक दृष्टि रखती है।

4. डी.एन. मजुमदार एवं टी.एन. मदन की पुस्तक जनजातियों की संस्कृति, विवाह, परिवार, नातेदारी,

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

आर्थिक संगठन की गहन विवेचना की है। इसके साथ–साथ इस पुस्तक जनजातीय समुदाय के बीच प्रचलित धर्म, जादू, कला और जनजातीय जीवन के विविध संगठनों का ऐतिहासिक वर्णन भी किया है।

अवधारणात्मक व्याख्या

प्रस्तुत शोध–आलेख में जनजातीय महिलायें एवं उनकी समस्या एक प्रमुख अवधारणा के रूप में है जिसकी व्याख्या इस प्रकार है :

के.एल. शर्मा जनजातीय समुदाय की समस्याओं के संदर्भ में कहते हैं कि– "जनजातीय स्थिति भारत के सब भागों में एक समान नहीं है। उत्तर–पूर्व भारत में कई वर्षों से हालत बिगड़ी हुई है और मध्यभारत में गरीबी, बेरोजगारी, ऋणग्रस्तता, पिछड़ापन और अज्ञानता आदि की समस्या तीक्ष्ण बनी हुई है।"[4] जनजातियों के समस्याओं के संदर्भ में डी.एन. मजूमदार एवं टी. एन. मदन का दृष्टिकोण इस प्रकार है– "संपूर्ण जनजातीय भारत आज संक्रमण के कठिन दौर से गुजर रहा है। प्रत्येक जनजाति या जनजातियों के समूह की इसके प्रति समान प्रतिक्रिया नहीं है। यह बात इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि विभिन्न जनजातियों की जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियों में कोई एकरूपता नहीं है। एक तरफ भील, गोंड एवं कुछ अन्य जनजातियां हैं जो शेष भारत के अनुरूप तीव्र गति से अपनी जनसंख्या वृद्धि कर रही हैं तो दूसरी तरफ कोरवा और टोडा भी है, जिनकी संख्या गंभीर रूप से कम होती जा रही है।"[5] जनजातियों की समस्याओं के संदर्भ में ज्यां द्रेज़ एवं अमर्त्य सेन कहते हैं कि– "हमारी बात कोई नहीं मानेगा– हम लोग लाठी चलाने वाले नहीं हैं।" यह कहना था छत्तीसगढ़ में सरगुजा जिले के दूर–दराज के गांव झापर की एक आदिवासी महिला का। यह 2001 के अक्टूबर महीने की बात है। वह अपने इलाके में सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) की निष्क्रियता को लेकर नाराज थी। राशन की दुकान वहां से पैदल 3 घंटे दूरी पर थी। केवल यह दूरी ही वहाँ के लोगों की परेशानी का कारण नहीं थी।"[6]

उद्देश्य

1. जनजातीय महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन से जुड़ी समस्याओं का अध्ययन करना।
2. जनजातीय महिलाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा एवं स्वतंत्र जीवन से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न

1. क्या जनजातीय महिलाओं का सामाजिक–आर्थिक, राजनीति एवं सांस्कृतिक जीवन अभी भी मुख्यधारा से जुड़ नहीं पाया है?
2. क्या जनजातीय महिलायें आज भी शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण की समस्या से जूझ रही हैं?
3. क्या जनजातीय महिलायें आज भी सरकारी नौकरी एवं रोजगार से वंचित हैं?

शोध प्रारूप

प्रस्तुत शोध आलेख अनुभवजन्य पद्धति पर आधारित है जिसकी प्रकृति वर्णनात्मक है। साथ ही ऐतिहासिक पक्षों को भी आधार बनाया गया है। अर्थात् प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों का संकलन किया गया है। प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त तथ्यों के आधार पर आदिवासी महिलाओं की

समस्याओं को अधोलिखित पक्षों पर विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है :

गरीबी की समस्या

गरीबी भारत की ही नहीं, वरन् वैश्विक एक समस्या है। बहुतायत देशों की जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रही है। भारत में जनजातीय समुदाय आज भी आर्थिक रूप से बहुत समृद्ध नहीं है। आज भी भारत की कुल जनजातीय संख्या का 25.7 प्रतिशत गरीबी रेखा से नीचे जीवन जीने को मजबूर हैं। जनजातीय महिलायें घर की चारदीवारी के बीच जीवन जीने को मजबूर हैं। जनजातीय पुरुषों पर ही इनका जीवन आश्रित है। जनजातीय पुरुष रोजगार के अभाव में गरीबी के साथ जीवन को गति दे रहे हैं। जनजातीय महिलायें की उपस्थिति विविध रोजगारों में नगण्य है। हाँ जीविकोपार्जन हेतु ये दिहाड़ी मजदूरी करने के लिये मजबूर हैं। परन्तु यहां एक समस्या यह भी है कि दिहाड़ी मजदूरी से सम्बन्धित कार्य भी इन्हें प्रतिदिन नहीं मिलता है। ये सभी पक्ष इनके गरीबी के लिए एक महत्वपूर्ण अभिकरण के रूप में उत्तरदायी हैं।

शिक्षा की समस्या

इस धरा पर मनुष्य का आगमन एक जैविक प्राणी के रूप में होता है लेकिन समाज में समाजीकरण की प्रक्रिया के उपरान्त मानव एक सामाजिक प्राणी के रूप में अपने को परिवर्तित करता है। हाँ इतना जरूर है कि एक जैविक प्राणी से सामाजिक प्राणी की यात्रा में ढेर सारे कारक उत्तरदायी होते हैं। उन कारकों का यदि हम मूल्यांकन करें तो शिक्षा एक महत्वपूर्ण अभिकरण के रूप में दृष्टिगोचर होती है। शिक्षा मानव को मूल्यों के अनुरूप जीवन जीना सीखाती है तो वहीं दूसरी तरफ आर्थिक उपादान का भी एक सशक्त माध्यम बनती है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि शिक्षा के अभाव में मानव का सर्वांगीण विकास असंभव है। आज उत्तर आधुनिकता के पायदान पर लोकजन के बीच शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व है। इसलिये कहा जा सकता है कि शिक्षा से समाज और मनुष्य दोनों का उत्कर्ष होता है। शिक्षा से ही मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है। शास्त्र एवं विवेक से शिक्षा उत्पन्न होती है।[7] मनुष्य किसी भी मनुष्य से बड़ा उस स्थिति में होता है, जब उसकी बुद्धि एवं मस्तिष्क शिक्षा द्वारा तीव्र और उच्च होती है। इसीलिए विद्याहीन मनुष्य को पशुवत कहा गया है।[8]

अतएव कहा जा सकता है कि शिक्षा में ज्ञान, आचरण, तकनीकी दक्षता के साथ–साथ विद्या प्राप्ति आदि सम्मिलित है। शिक्षा के व्यापक अर्थ को हम देखें तो यह निरन्तर चलने वाली उद्‌देश्यपूर्ण सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात बुद्धि का विकास तथा उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि होती है जिससे उसके व्यवहार एवं उसके सामाजिक क्रिया में परिवर्तन होता है। यद्यपि यह सिक्के का एक पक्ष है, सिक्के के दूसरे पक्ष को हम देखें तो जनजातीय महिलाओं के बीच शिक्षा का स्तर आज भी बहुत कम है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनजातीय समुदाय की शिक्षा का प्रतिशत 59 है।[9] इस परिणाम की तुलना अन्य समाजों से करें तो स्पष्ट दृष्टिगोचर है कि जनजातीय समुदाय के शिक्षा का स्तर काफी निचले पायदान पर है।

चिकित्सा एवं पोषण की समस्या

भारत की आयुर्वेदिक चिकित्सा का महात्म अनादिकाल से रहा है जो काफी सस्ती एवं परम्परागत स्वरूप में लोकजन के बीच उपस्थित रही है। लेकिन आज आधुनिक चिकित्सा का प्रभाव कहीं अधिक है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति काफी महंगी है, जो जनजातीय समुदाय के अधिकार क्षेत्र से बाहर है। उत्तर आधुनिकता के पायदान पर औषधियाँ महंगी होने के कारण यह समाज इससे काफी दूर है। यदि हम

जनजातीय समुदाय की महिलाओं के बीच स्वास्थ्यगत स्थिति को देखें तो ये काफी पीछे हैं। साथ ही साथ उचित समय पर चिकित्सा सुविधा न मिलने के कारण इनके बीच मृत्यु दर भी अधिक है। इनके पोषण का स्तर देखें तो जनजातीय महिलाओं की अधिकांश जनसंख्या निर्धारित कैलोरी से वंचित हैं। इनके बच्चे भी कुपोषित हैं। वैसे इस दिशा में सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों के प्रयास सराहनीय है। फिर भी और प्रयासों की जरूरत है, जिससे इनकी चिकित्सा व्यवस्था सुनिश्चित की जा सके।

जल की समस्या

अनादिकाल से अद्यतन देखें तो घर–गृहस्थी की जिम्मेदारी महिलाओं पर ही रही है। जनजातीय महिलायें भी इसी भूमिका की हिस्सा हैं। कुछ जनजातीय क्षेत्रों में हम देखें तो भू–जल का स्तर बहुत ही नीचे है। साथ ही साथ कहीं–कहीं तो जमीन के नीचे बहुतायत पत्थर ही हैं जिनके कारण इन्हें पानी लेने काफी दूर जाना पड़ता है। जिससे इनके समय का बड़े स्तर पर अपव्यय होता है।

रोजगार एवं सरकारी नौकरी की समस्या

जनजातीय महिलाओं के बीच शिक्षा का स्तर काफी कम है जिसके कारण सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों में रोजगार से वे वंचित हैं। दूसरे राज्यों में काम करने के लिये अथवा रोजगार प्राप्त करने हेतु भाषा भी बाधक बनती है। सरकारी क्षेत्रों के साथ–साथ गैर–सरकारी क्षेत्रों में भी इनकी रोजगार के संदर्भित इनकी सहभागिता का प्रतिशत अन्य की अपेक्षा काफी कम है।

पर्याप्त कैलोरीयुक्त भोजन की समस्या

मानव की मौलिक आवश्यकताओं में एक महत्वपूर्ण आवश्यकता पर्याप्त कैलोरीयुक्त भोजन की उपलब्धता की है। लेकिन जनजातीय महिलाओं के बीच हम देखें तो आज भी निर्धारित कैलोरीयुक्त भोजन से ये वंचित हैं। जिसके कारण इनका सर्वांगीण स्वास्थ्यगत विकास नहीं हो पाता है। साथ ही साथ पर्याप्त कैलोरीयुक्त भोजन न मिलने के कारण जनजातीय महिलायें कुपोषित एवं विभिन्न रोगों से ग्रसित हो रही हैं।

भाषा की समस्या

मानव के बीच भाषा अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। भारत एक बहुभाषी देश है जहाँ क्षेत्रीय भाषाओं के साथ–साथ अंग्रेजी व हिन्दी भाषा का बोलबाला है। अधिकांश जनजातीय महिलायें अभिव्यक्ति के प्रदर्शन में क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करती हैं। लेकिन आज सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों में रोजगार के लिए हिन्दी और अंग्रेजी भाषा की जानकारी होना आवश्यक है। साथ ही साथ जनजातीय क्षेत्रों से इतर शहरी क्षेत्रों में हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा की जानकारी होना भी आवश्यक है। अतएव देखा जाय तो जनजातीय महिलायें आज भी भाषा की समस्या से जूझ रही हैं।

आवास की समस्या

जनजातीय महिलाओं के आवास की संरचना को हम देखें तो स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि इनके आवास आज भी बहुतायत छप्परयुक्त हैं। इनके आवास के कमरों की संख्या भी एक अथवा दो ही होती है जिसमें इनके गृहस्थी की पूरी सामग्री होती है। इनके बच्चों के पढ़ने के लिये अलग से कोई आवास नहीं है। वैसे सरकारी संगठनों द्वारा इन्हें निःशुल्क आवास प्रदान किये जा रहे हैं।

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

मनोरंजन की समस्या

आदिवासी समाज अपने परम्परागत कार्यक्रमों एवं उत्सवों के माध्यम से अपना मनोरंजन करता है जिसमें हम लोकगीत और लोकनृत्यों को बखूबी देख सकते हैं। आधुनिक मूल्यों के प्रभाव के कारण इनके मनोरंजन के साधन परिवर्तित हुये हैं। परन्तु उस पर हस्तक्षेप बहुतायत पुरुषों का ही है। जिसके प्रभावस्वरूप महिलाओं के मनोरंजन के साधन कमजोर पड़े हैं।

कम मजदूरी की समस्या

आज आदिवासी महिलायें कृषि सेक्टर के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में भी मजदूर के रूप में कार्य कर रही हैं। लेकिन इनकी निर्धारित मजदूरी पुरुषों की तुलना में काफी कम है जबकि श्रम पुरुषों के ही बराबर कराये जाते हैं। कृषि कार्य में संलग्न आदिवासी महिलाओं के कार्यों का निर्धारित वेतन प्रदान नहीं किया जाता है।

सामाजिक सुरक्षा की समस्या

विविध अध्ययनों एवं अनुसंधानकर्ता के अवलोकन के उपरान्त इस संदर्भ में यह तथ्य प्राप्त हुआ कि आदिवासी महिलायें यौन–शोषण का शिकार हो रही हैं। सामाजिक सुरक्षा के कारण जनजातीय लड़कियों की शिक्षा भी प्रभावित हो रही है। आदिवासी परिवार में महिलाओं का सम्पत्ति पर अधिकार भी नहीं है। साथ ही साथ इन्हें हिंसा का शिकार भी होना पड़ता है। नक्सल संगठनों द्वारा इनका शारीरिक एवं मानसिक शोषण भी किया जाता है।

सांस्कृतिक प्रथाओं की समस्या

जनजातीय महिलाओं के बीच कुछ ऐसी सांस्कृतिक प्रथायें हैं जो काफी कष्टदायी एवं मानसिक विकार प्रदान करने वाली होती है जिसमें जननांग विच्छेदन सहित अन्य कई प्रथाओं को देखा जा सकता है।

स्वतंत्र जीवन का अभाव

अनादिकाल से ही महिलाअें की प्रस्थिति एवं भूमिका कुछ निर्धारित खूंटे में बंधी रही है। लेकिन आज स्वतंत्र जीवन की वकालत बड़ी तेजी से की जा रही है जिससे महिलाओं की परतंत्रता कमजोर पड़ी हैं। महिलायें पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। परन्तु जनजातीय महिलाओं की यदि हम बात करें तो आज भी जनजातीय महिलाओं का जीवन पुरुषा सत्ता पर निर्भर है। जनजातीय महिलाओं की स्वतंत्रता बाधित है। यह उनके जीवन का बड़ी समस्या है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत शोध आलेख के निष्कर्ष के संदर्भ में कहा जा सकता है कि जनजातीय महिलायें आज उत्तर आधुनिकता के पायदान पर भी विविध समस्याओं का सामना कर रही हैं जो उनके सर्वांगीण विकास में सबसे बड़ी बाधा भी हैं। आज जनजातीय महिलाओं का शिक्षा का स्तर काफी निम्न हैं, जिसके कारण वे विविध क्षेत्रों में काफी पीछे हैं। स्वास्थ्य एवं कुपोषण की समस्या उन्हें कमजोर बना रही हैं, तो वहीं निर्धारित कैलोरीयुक्त भोजन का न मिलना, समय से पहले उन्हें मृत्यु की तरफ ले जा रहा है। आज उत्तर आधुनिकता के पायदान पर भी महिलाओं की प्रस्थिति एवं भूमिका पुरुषों के द्वारा ही संचालित हो रही है जिसके कारण वे स्वतंत्र जीवन से बहुत दूर हैं।

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

संदर्भ

उत्प्रेती, हरिश्चन्द्र : भारतीय जनजाजियाँ : संरचना एवं विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, वर्ष 2007, पृ.1

https://www.jagranjosh.com/general-knowledge/major-tribes-found-in-uttar-pradesh-in-hindi-1538055665-2

वही

शर्मा, के. एल. : भारतीय सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन, रावत पब्लिकेसंस, जयपुर, वर्ष 2010, पृ. 88

मजूमदार, डी. एन. एवं टी. एन. मदन : सामाजिक मानवशास्त्र परिचय, मयूर पेपर बैक्स, नौएडा, वर्ष 2008, पृ. 235

द्रेज़, ज्यां एवं अमर्त्य सेन : भारत और उसके विरोधाभास, राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली, वर्ष 2019, पृ. 188

विष्णु पुराण : गीता प्रेस, गोरखपुर 6,5,6

नीति शतक : गीता प्रेस, गोरखपुर 31.18

*https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1527342#:~:text=*जनगणना

Cite Your Article As:

Shobhnath Pathak. (2023). JANJATIY MAHILAO KI SAMSYAYE: UTTAR PRADESH KE SANDARBH MAIN EK ADHYAYAN. Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,, 11(57), 209–215. https://doi.org/10.5281/zenodo.8076972

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language